अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

दक्षिण के मैनचेस्टर कोयम्बत्तूर में महातपस्वी महाश्रमण का मंगल प्रवेश

-स्वागत-अभिनन्दन को उमड़ा कोयम्बत्तूर का जन-जन

-पारंपरिक रंगों में रंगे भव्य और विशाल जुलूस के साथ महातपस्वी पहुंचे सुगना आॅडिटोरियम

-नागरिक अभिनन्दन समारोह में गणमान्यों ने आचार्यश्री की अभिवन्दना

-व्यवहार को धर्माजित बनाने का आचार्यश्री ने प्रदान किया पावन संदेश

-अनेकानेक महानुभावों ने आचार्यश्री और अहिंसा यात्रा के संदर्भ में व्यक्त किए अपने आस्थासिक्त भाव

06.02.2019 कालपट्टी, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): अपने आराध्य को अपनी धरती पर देखने की वर्षों से लगी आस लिए हजारों नयनों में उस समय आस्था, आह्लाद और आनंद की ज्योति जल उठी जब जन-जन के मानस को अपने मंगल वाणी से पावन बनाने वाले, लोगों को सत्पथ दिखाने वाले, मानवता के मसीहा, शांतिदूत अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल रश्मियों के साथ कोयम्बत्तूर की धरती पर अपने ज्योतिचरण टिकाए। उन नयनों ने मानों इस नयनाभिराम दृश्य को देखा तो भीतर में भावों का ज्वार उमड़ पड़ा और फिर आंखों से खुशी की कुछ बूंदे ढुलक पड़ीं। अब उन नयनों में तृप्तता देखी जा सकती थी।

जी हां! ऐसा ही दृश्य दिखाई दे रहा था दक्षिण भारत के मैनचेस्टर और औद्योगिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध कोयम्बत्तूर में जब बुधवार को दक्षिण भारत का प्रथम मर्यादा महोत्सव करने हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल प्रवेश हो रहा था। इसके पूर्व आचार्यश्री निलाम्बुर स्थित जी.आर.डी.-सी.पी.एफ. मैट्रिक हायर सेकेण्ड्री स्कूल से प्रातः की मंगल बेला में प्रस्थान किया। आचार्यश्री जैसे-जैसे कोयम्बत्तूर नगर के निकट होते जा रहे थे, श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही थी। गुरुकुलवास से लगभग ढाई महीने बहिर्विहार के रूप में बाहर रही मुख्यनियोजिकाजी साध्वी विश्रुतविभाजी ने आचार्यश्री का मार्ग में दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। अपनी संपूर्ण धवल रश्मियों के साथ जैसे ही नगर में पावन प्रवेश किया तो उपस्थित सैंकड़ों श्रद्धालुओं सहित अनेकानेक जैन-जैनेतर लोगों आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। पारंपरिक वाद्ययंत्रों की मंगल ध्वनि के साथ नगर की अनेकानेक संगठन और संस्थाओं से जुड़े सदस्य जुलूस के रूप में आचार्यश्री के दर्शन कर रहे थे। भव्य जुलूस के साथ आचार्यश्री नगर के कालपट्टी स्थित सुगना आॅडिटोरियम में पधारे।

आॅडिटोरियम में आयोजित नागरिक अभिनन्दन समारोह का आयोजन था। कार्यक्रम का शुभारम्भ कोयम्बत्तूर महिला मण्डल के मंगलाचार से हुआ। तेरापंथ युवक परिषद ने स्वागत गीत का संगान किया। आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया, स्वागताध्यक्ष श्री पूनमचंद मरोठी, जैन महासंघ के श्री रमेश सुतलिया, सी.बी.आई के रिटायर्ड डायरेक्टर डाॅ. डी.आर. कार्तिकेयन, भारत विद्या भवन के चेयरमेन डाॅ. बी.के. कृष्णराज वनवारयार, इंडियन चेम्बर आॅफ कामर्स के अध्यक्ष श्री वी. लक्ष्मीनारायणसामी, रिडायर्ड डीजीपी श्री नरेन्द्र पाल सिंह, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष श्री बाबूलाल मेहता, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष श्री घिसूलाल हिंगर, शांति आश्रम की डायरेक्टर श्रीमती विनू अरम, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मधु बांठिया, राजस्थानी संघ के अध्यक्ष श्री कैलाश जैन, जैन संघ के महामंत्री श्री गुलाब मेहता व श्री श्रवण बोहरा ने आचार्यश्री के समक्ष अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्यनियोजिकाजी तथा तेरापंथ धर्मसंघ की असाधारण साध्वीप्रमुखाजी ने भी श्रद्धालुओं को प्रेरणा प्रदान किया और सौभाग्य से प्राप्त इस सुअवसर का संपूर्ण लाभ उठाने को उत्प्रेरित किया।

परम पावन महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कोयम्बत्तूर की धरती से प्रथम पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आदमी का व्यवहार धर्माजित होना चाहिए। जो आचरण व व्यवहार महापुरुषों ने किया, आदमी को उसका आचरण करने का प्रयास करना चाहिए और अपने जीवन को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए। आदमी के आचरणों में धर्म का समागमन होना चाहिए। गृहस्थ के सामान्य धर्म बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सुपात्र दान देना अर्थात शुद्ध साधु को शुद्ध दान देना, आध्यात्मिक धर्म होता है। गुरु और साधुओं के प्रति विनय, सम्मान का भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं द्वारा दूसरांे को कष्ट न पहुंचे ऐसा प्रयास करना चाहिए। आदमी को न स्वयं डरना चाहिए और न दूसरों को डराना चाहिए। आदमी को संत पुरुषों की संगति का लाभ उठाकर अपने आचरण को धर्ममय बनाने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने कोयम्बत्तूरवासियों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प भी प्रदान किए और मंगलमय आशीष भी प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में श्री जैनसुख बैद ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री राजकरण गिड़िया तथा राजस्थानी संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक लुणिया ने किया।